

YUKTI

द्वितीय
संशोधित संस्करण

फास्ट-ट्रैक

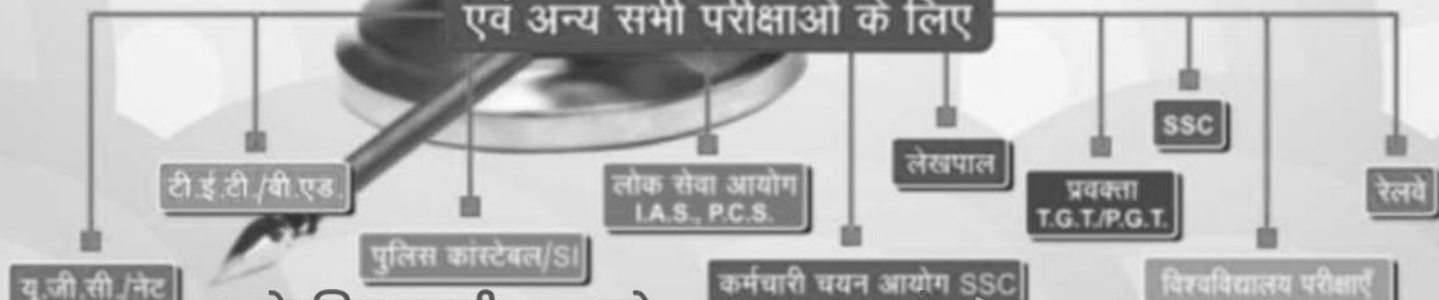


हिन्दी

QUICK REVISION + SELF CRASH COURSE SERIES

- व्याख्या व उदाहरणों द्वारा सम्पूर्ण हिन्दी के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का सार
- प्रत्येक अध्याय के अन्त में परीक्षा में आये हुए महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न
 - प्रश्नों की व्याख्या द्वारा समझाने का नवीन प्रयास—
दिए गए 4 विकल्पों में 1 विकल्प ही सही क्यों है, शेष 3 क्यों नहीं
- पिछले 25 वर्षों से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बार-बार पूछे गये प्रश्नों का विशिष्ट संकलन

एवं अन्य सभी परीक्षाओं के लिए



Best Study के लिए हमारी App को Download करें ▶ GK Trick By Nitin Gupta

विषय सूची

1. हिन्दी भाषा	7	8. काव्यशास्त्र	66
2. हिन्दी व्याकरण	9	8.1 रस	66
2.1 संज्ञा	10	8.2 काव्य सम्प्रदाय	67
2.2 सर्वनाम	10	8.3 पाश्चात्य काव्यशास्त्र	68
2.3 विशेषण	10	8.4 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ और उनके रचयिता	70
2.4 क्रिया	10	8.5 छन्द	72
2.5 अव्यय	11	8.6 अलंकार	73
3. शब्द रचना	12	9. हिन्दी साहित्य का इतिहास	76
3.1 सन्धि	12	9.1 आदिकाल	77
3.2 समास	13	9.2 भक्तिकाल	78
3.3 उपसर्ग	15	9.3 रीतिकाल	81
3.4 प्रत्यय	16	9.4 आधुनिक काल	82
4. हिन्दी शब्दावली	18	1. आधुनिक काल की कविता (पद्य)	82
4.1 हिन्दी शब्द समूह	18	(i) भारतेन्दु युग	83
4.2 पारिभाषिक शब्दावली	20	(ii) द्विवेदी युग	83
4.3 पर्यायवाची शब्द	23	(iii) छायावादी युग	85
4.4 विलोम शब्द	26	(iv) प्रगतिवादी युग	86
4.5 समश्रुत शब्द	30	(v) प्रयोगवाद एवं नयी कविता	86
4.6 अनेकार्थी शब्द	32	(vi) नवगीत	88
4.7 वाक्यांश के लिए एक शब्द	37	2. आधुनिक काल की विभिन्न विधाएँ (गद्य)	89
5. वर्तनी एवं विराम चिह्न	44	(i) उपन्यास	89
5.1 वर्तनी	44	(ii) आत्मकथाएँ	91
5.2 विराम चिह्न	48	(iii) जीवनी	82
6. वाक्य विचार	49	(iv) नाटक	93
6.1 रचना की दृष्टि से वाक्य भेद	49	(v) एकांकी	93
6.2 अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद	50	(vi) रेखाचित्र संस्मरण	94
6.3 वाक्य के आधार पर वाक्य भेद	50	(vii) यात्रावृत्त	95
6.4 प्रयोग के आधार पर वाक्य भेद	50	(viii) आलोचना	96
7. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	52	(ix) निबन्ध	97
प्रमुख मुहावरों की सूची	53	(x) हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ	98
कुछ प्रसिद्ध लोकोक्तियाँ एवं उनके वाक्य प्रयोग	59	पुरस्कृत रचनाएँ	100
		10. अपठित बोध	103

First Edition : 2017

Second Edition : 2018

© All rights reserved with publisher

YUKTI

YUKTI PUBLICATIONS

Head Office : 14/132, First Floor

Garhaiya Hakimian Lane,

Hospital Road, Agra - 282003

Ph. : +91 7500029885, 9837259933, 0562-2263135

e-mail : yuktipublication@gmail.com

Website : www.yuktipublications.com

₹95.00

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning or otherwise without the prior written permission of the publishers. Yukti Publications has acquired the information contained in this book from the sources believed to be reliable. However Yukti Publications or its authors or the editors don't take any responsibility for the absolute accuracy of the information published and the damages suffered due to the use of this information. All disputes are subject to Agra (U.P.) Jurisdiction only.

GK Trick By Nitin Gupta

हिन्दी



अध्याय 1. हिन्दी भाषा

- ◆ हिन्दी भाषा का प्रादुर्भाव कब हुआ? —1000 ई. के आस-पास
- ◆ भाषाओं का विकास क्रम किस प्रकार है?
संस्कृत → पाली → प्राकृत → अपभ्रंश → हिन्दी
- ◆ हिन्दी से ठीक पहले की भाषा कौन सी थी? —अपभ्रंश
- ◆ हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती है? —देवनागरी लिपि में

YUKTI ज्ञान—हिन्दी भारत की 'राजभाषा' (सरकारी कामकाज की भाषा) है। संविधान के भाग 17, अध्याय 1 की धारा 343 (i) में हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया है, जिसकी लिपि देवनागरी होगी।

- ◆ हिन्दी भारत के लगभग 70 करोड़ लोग बोलते-समझते हैं। इसलिए यह देश के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है और इसी कारण यह भारत की राष्ट्रभाषा कही जाती है।
- ◆ हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है? —14 सितम्बर

YUKTI ज्ञान—14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, क्योंकि संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को 'हिन्दी' भारत की राजभाषा होगी—यह प्रस्ताव पास किया था।

- ◆ हिन्दी उत्तर भारत के कितने प्रान्तों की भाषा है? —10

YUKTI ज्ञान—हिन्दी उत्तर भारत के 10 प्रान्तों की भाषा है। इनके नाम हैं—हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखण्ड। इसे हिन्दी क्षेत्र अथवा हिन्दी प्रदेश भी कहा जाता है।

- ◆ हिन्दी के अन्तर्गत पाँच उपभाषाएँ और 18 बोलियाँ हैं। इनके नाम हैं—
(i) पश्चिमी हिन्दी; उपभाषा—ब्रज, खड़ी बोली, कन्नौजी, बुंदेली, बांगरू।
(ii) पूर्वी हिन्दी; उपभाषा—अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
(iii) बिहारी हिन्दी; उपभाषा—भोजपुरी, मैथिली, मगही।
(iv) राजस्थानी हिन्दी; उपभाषा—मेवाती, मालवी, मारवाड़ी, जयपुरी।
(v) पहाड़ी हिन्दी; उपभाषा—गढ़वाली, कुमायूनी, नेपाली।
- ◆ हिन्दी में प्रकाशित भारत का पहला समाचार-पत्र कौन-सा था?

—उदन्त मार्तण्ड

हिंदी का सर्वप्रथम पत्र
उदन्तमार्तण्ड

YUKTI ज्ञान—'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार-पत्र था, जो कलकत्ता से 1826 ई. में पं. जुगल किशोर के सम्पादन में प्रकाशित हुआ था।

- ◆ पश्चिमी हिन्दी और उसकी बोलियों का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ, जबकि पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है।
- ◆ पंजाब, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र, आन्ध्र में भी प्रान्तीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी बोली-समझी जाती है।
- ◆ हिन्दी फिल्मों, टेलीविजन कार्यक्रमों, रेडियो एवं टीवी पर प्रसारित होने वाली हिन्दी खेल कमेंटरी ने हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में विशेष सहायता की है।
- ◆ वर्तमान में हिन्दी अखबारों की संख्या 300 से 350 के आस-पास है। इतनी बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकाएँ किसी दूसरी भाषा में नहीं प्रकाशित की जाती।
- ◆ हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा भी है, क्योंकि दो भिन्न प्रान्तीय भाषाएँ बोलने वाले लोग पारस्परिक सम्पर्क के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं।
- ◆ कुम्भ मेले में, जहाँ पूरे देश के लोग आते हैं, सम्पर्क के लिए हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।
- ◆ संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं का उल्लेख है?—22

YUKTI ज्ञान—संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है—

1. असमिया, 2. गुजराती, 3. कन्नड़, 4. कोंकणी, 5. मणिपुरी, 6. नेपाली, 7. पंजाबी, 8. सिन्धी, 9. तेलुगु, 10. बोडो, 11. संथाली, 12. बंगला, 13. हिन्दी, 14. कश्मीरी, 15. मलयालम, 16. मराठी, 17. उड़िया, 18. संस्कृत, 19. तमिल, 20. उर्दू, 21. मैथिली, 22. डोगरी।

- ◆ हिन्दी किस परिवार के अन्तर्गत आती है? —भारोपीय परिवार

YUKTI ज्ञान—हिन्दी भारोपीय परिवार के अन्तर्गत आने वाली आर्य भाषा है। आर्य भाषा काल के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ इस प्रकार हैं—

- प्राचीन आर्य भाषा—संस्कृत।
- मध्यकालीन आर्य भाषाएँ—पाली, प्राकृत, अपभ्रंश।
- आधुनिककालीन आर्य भाषाएँ हैं— 1. हिन्दी, 2. पंजाबी, 3. मराठी, 4. बंगला, 5. सिन्धी, 6. गुजराती, 7. उड़िया, 8. असमिया।

- ◆ उत्तर भारत में आर्य भाषाएँ बोली जाती हैं, तो दक्षिण भारत में द्रविड़ परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनकी संख्या चार है—

1. तेलुगु (आन्ध्र प्रदेश में), 3. तमिल (तमिलनाडु में), 2. कन्नड़ (कर्नाटक में), 4. मलयालम (केरल में)।

- ◆ वर्तमान में जो हिन्दी शिक्षा, संचार, प्रशासन आदि में प्रयुक्त हो रही है, उसका मूल आधार खड़ी बोली है, जो पश्चिमी हिन्दी की एक बोली है तथा दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, सहारनपुर की बोली है। यह शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है।

- ◆ देवनागरी वर्णमाला—

ध्यान रहे यह सरकारी देवनागरी वर्णमाला नहीं है। इसमें कुल 52 वर्ण हैं जिसमें से स्वर वर्ण 11 हैं तथा शेष 41 वर्ण व्यंजन हैं। यथा—

- स्वर — अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = 11
- अनुस्वार — अं = 1
- विसर्ग — अः = 1
- व्यंजन — क, ख, ग, घ, ङ —कण्ठ्य
च, छ, ज, झ, ञ —तालव्य
ट, ठ, ड, ढ, ण —मूर्धन्य
त, थ, द, ध, न —दंत्य
प, फ, ब, भ, म —ओष्ठ्य
य, र, ल, व —अंतस्थ — 4
श, ष, स, ह —ऊष्म — 4
क्ष, त्र, ज्ञ, श्र —संयुक्त व्यंजन — 4
ड़, ढ —उत्क्षिप्त अथवा द्विगुण व्यंजन

टिप्पणी—

- भाषा की न्यूनतम इकाई ध्वनि है।
- ध्वनियों से मिलकर वर्ण बनते हैं।
- वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहा जाता है।
- हिन्दी देवनागरी वर्णमाला में लिखी जाती है।
- अनुस्वार, विसर्ग को किशोरी दास वाजपेयी ने अयोगवाह नाम देकर इन्हें व्यंजन माना है, स्वर नहीं।
- ड़, ढ, ड और ढ की अनुपूरक ध्वनियाँ हैं। ड, ढ का प्रयोग शब्द के प्रारम्भ में तथा ढ, ढ का प्रयोग शब्द के मध्य में या अन्त में होता है। यथा—
डलिया, ढाल
लड़का, पढ़ना
लड़ा, पढ़ा
- सरकारी वर्णमाला में ङ, ढ, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अतः वहाँ कुल वर्णों की संख्या 52 - 3 = 49 ही मानी गयी है।
- देवनागरी में कुल कितने वर्ण हैं। इस पर विद्वान् एकमत नहीं हैं।
- संयुक्त व्यंजन — दो व्यंजनों के मेल से बने हैं।
क्ष = क् + ष
त्र = त् + र
ज्ञ = ज् + ञ
श्र = श् + र

◆ देवनागरी वर्णमाला—(सरकारी)

- स्वर—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- अनुस्वार—अं
- विसर्ग—अः
- व्यंजन— क, ख, ग, घ, ङ —कण्ठ्य
च, छ, ज, झ, ञ —तालव्य
ट, ठ, ड, ढ, ण —मूर्धन्य
त, थ, द, ध, न —दंत्य
प, फ, ब, भ, म —ओष्ठ्य

- य, र, ल, व —अंतस्थ
- श, ष, स, ह —ऊष्म
- क्ष, त्र, ज्ञ —संयुक्त व्यंजन

YUKTI ज्ञान—1. देवनागरी वर्णमाला (सरकारी स्तर) में 11 स्वर हैं। 2. देवनागरी वर्णमाला में 38 व्यंजन हैं। 3. देवनागरी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन मिलाकर कुल 49 वर्ण हैं।

- 'अं' को अनुस्वार, 'अः' को विसर्ग माना गया है। ये दोनों स्वर न होकर व्यंजन ध्वनियाँ हैं। तीसरी ध्वनि अनुनासिक भी है। जैसे—
अनुस्वार— अंगद, अंग, अंक
विसर्ग— दुःख
अनुनासिक— आँगन, आँवला, हँसना
- 'श्र' को सरकारी देवनागरी में स्थान प्राप्त नहीं है।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- साहित्यिक अपभ्रंश को पुरानी हिन्दी किसने कहा था?
(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) शिवसिंह सेंगर (d) राहुल सांकृत्यायन
उत्तर—(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (हिन्दी साहित्य का इतिहास)
- हिन्दी का सम्बन्ध किससे है?
(a) शौरसेनी अपभ्रंश (b) अपभ्रंश
(c) प्राकृत (d) पश्चिमी प्राकृत
उत्तर—(a) शौरसेनी अपभ्रंश (डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा)
- इनमें से कौन-सी रचना अवधी में नहीं है?
(a) पद्मावत (b) मधुमालती
(c) कवितावली (d) हंस जवाहिर
उत्तर—(c) कवितावली

YUKTI ज्ञान—कवितावली, ब्रजभाषा में तुलसीदास द्वारा रचित मुक्तक काव्य है।

- भोजपुरी, मगही, मैथिली किस उपभाषा की बोलियाँ हैं?

छत्तीसगढ़ प्राध्यापक

- (a) पश्चिमी हिन्दी (b) पूर्वी हिन्दी
 - (c) बिहारी (d) राजस्थानी
- उत्तर—(c) बिहारी

YUKTI ज्ञान—भोजपुरी, मैथिली, मगही बिहारी उपभाषा की बोलियाँ हैं।

- छत्तीसगढ़ी बोली किस उपभाषा की है? उ.प्र. टी.ई.टी.
(a) पूर्वी हिन्दी (b) पश्चिमी हिन्दी
(c) पहाड़ी हिन्दी (d) राजस्थानी हिन्दी
उत्तर—(a) पूर्वी हिन्दी

YUKTI ज्ञान—पूर्वी हिन्दी की तीन बोलियाँ हैं— अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।

- ब्रजभाषा का विकास किस अपभ्रंश से हुआ?
(a) शौरसेनी (b) मागधी

- (c) अर्द्धमागधी (d) पैशाची
उत्तर—(a) शौरसेनी

YUKTI ज्ञान—ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी की बोली है जो शूरसेन प्रदेश में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।

7. हिन्दी को राजभाषा कब घोषित किया गया ?
(a) 26 जनवरी, 1950 (b) 14 सितम्बर, 1949
(c) 15 अगस्त, 1947 (d) 14 सितम्बर, 1965
उत्तर—(b) 14 सितम्बर, 1949

YUKTI ज्ञान—14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा और इसकी लिपि देवनागरी होने का प्रस्ताव पास किया था।

8. नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष है—
(a) 1980 ई. (b) 1890 ई.
(c) 1893 ई. (d) 1917 ई.
उत्तर—(c) 1893 ई.

YUKTI ज्ञान—1893 ई. में श्यामसुन्दर दास, पं. रामनारायण मिश्र, ठाकुर शिवकुमार सिंह ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। इसके प्रथम सभापति राधाकृष्णदास बनाए गए।

9. 'खालिकबारी' किसकी रचना है ?
(a) मुल्ला दो प्याजा (b) रहीम
(c) अमीर खुसरो (d) अकबर
उत्तर—(c) अमीर खुसरो

YUKTI ज्ञान—खालिकबारी हिन्दी खड़ी बोली के प्रथम कवि अमीर खुसरो की रचना है, वस्तुतः यह तुर्की, अरबी, फारसी के शब्दों का हिन्दी अर्थ बताने वाला शब्द-कोश है।

10. कौन-सी बोली उत्तर प्रदेश में नहीं बोली जाती है ?
(a) कन्नौजी (b) ब्रज
(c) खड़ी बोली (d) मैथिली
उत्तर—(d) मैथिली

YUKTI ज्ञान—मैथिली बिहार के मिथिला क्षेत्र में बोली जाती है और बिहारी उपभाषा के अन्तर्गत आती है, शेष तीनों पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ हैं और उ. प्र. में बोली जाती हैं।

11. इसमें से कौन-सा वर्ण कण्ठ्य है ? **उ.प्र. बी.एड.**
(a) य (b) प
(c) ग (d) त
उत्तर—(c) ग

YUKTI ज्ञान—व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान, उच्चारण प्रयत्न के आधार पर दिया गया है। कण्ठ्य व्यंजनों का उच्चारण कंठ से होता है। 'क' वर्ग के सभी व्यंजनों कण्ठ्य हैं अतः 'ग' कण्ठ्य व्यंजन है, शेष तीनों कण्ठ्य ध्वनियाँ नहीं हैं य—अंतस्थ, प—ओष्ठ्य, त—दंत्य व्यंजन है।

12. संयुक्त व्यंजन क्ष किन दो ध्वनियों के मेल से बना है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**
(a) क् + ष (b) क् + थ

- (c) च् + छ (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर—(a) क् + ष

YUKTI ज्ञान—क्ष संयुक्त व्यंजन है जिसमें क् + ष ध्वनियाँ समाविष्ट हैं। यथा— पक्षी = PAKSHI, शेष अशुद्ध हैं।

13. देवनागरी (सरकारी) वर्णमाला में कुल कितने वर्ण हैं। **उ.प्र. टी.ई.टी.**
(a) 50 (b) 51
(c) 49 (d) 52
उत्तर—(c) 49

YUKTI ज्ञान—सरकारी देवनागरी वर्णमाला में कुल 49 वर्ण हैं। वहाँ ङ, ढ, श्र को स्थान नहीं दिया गया है।

14. देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियों की संख्या है— **उ.प्र. टी.ई.टी.**
(a) 10 (b) 11
(c) 12 (d) 13
उत्तर—(b) 11

YUKTI ज्ञान—देवनागरी लिपि में स्वर ध्वनियाँ 11 हैं— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

15. अघोष व्यंजन कौन-सा है ? **उ.प्र. टी.ई.टी.**
(a) ग (b) द
(c) क (d) ब
उत्तर—(c) क

YUKTI ज्ञान—अघोष व्यंजन — 'क' है क्योंकि इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियाँ निकट नहीं होती। शेष तीनों अघोष ध्वनियाँ हैं।

नोट— स्वरों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है—

1. ह्रस्व स्वर — अ, इ, उ, ऋ, दीर्घ स्वर — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

2. मूल स्वर — अ, इ, उ, ऋ, संयुक्त स्वर — ए = अ + इ
ऐ = अ + ए
ओ = अ + उ
औ = अ + ओ

3. अग्रस्वर — इ, ई, ए, ऐ, मध्य स्वर — अ,
पश्च स्वर — आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान, प्रयत्न के आधार पर किया गया है।

प्रयत्न के आधार पर— स्पर्श, स्पर्श संघर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, प्रकम्पित, उत्क्षिप्त, संघर्षी, संघर्षहीन, अप्रवाह।

5. उच्चारण स्थान के आधार पर— ओष्ठ्य, दंत्य, कण्ठ्य, वत्स्य, तालव्य जिह्वामूलीय, स्वरयंत्रमुखी, पूर्व तालव्य, पश्च तालव्य।

अध्याय 2. हिन्दी व्याकरण

♦ हिन्दी का पहला व्याकरण ग्रन्थ किसने लिखा? —जे. जे. केटलर ने

YUKTI ज्ञान—हिन्दी का पहला व्याकरण ग्रन्थ जे. जे. कटलर ने लिखा। इनके अतिरिक्त सन् 1921 में कामताप्रसाद गुरु ने 'हिन्दी व्याकरण' और सन् 1928 में किशोरीदास बाजपेयी ने 'हिन्दी शब्दानुशासन' नामक प्रमुख व्याकरण ग्रन्थ लिखे।

- हिन्दी व्याकरण के पाँच प्रमुख तत्त्व हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय। इनमें से प्रथम चार विकारी हैं और अन्तिम अविकारी।

2.1 संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के प्रमुखतः तीन भेद हैं—

(1) व्यक्तिवाचक, (2) जातिवाचक, (3) भाववाचक।

- (1) किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु का बोध कराने वाली संज्ञा 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कही जाती है; यथा—राम, आगरा, गोदान।
- (2) जो संज्ञाएँ किसी एक ही प्रकार की समस्त वस्तुओं का बोध कराती हैं, उन्हें 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे—लड़की, नदी, पुस्तक।
- (3) जो संज्ञा किसी भाव का बोध कराती है, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहा जाता है; जैसे—प्रेम, क्रोध, दया, मिठास।
- हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं—पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग। संस्कृत में जो शब्द नपुंसक लिंग थे, वे हिन्दी में या तो पुल्लिंग बन गये या स्त्रीलिंग।
- हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन।
- हिन्दी में आठ कारक हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

2.2 सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थानापन्न होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं।

- हिन्दी में सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं। इनकी तालिका इस प्रकार है—
- 1. पुरुषवाचक — (अ) उत्तम पुरुष—मैं, हम
(ब) मध्यम पुरुष—तू, तुम, आप (आदरार्थ)
(स) अन्य पुरुष—वह, वे
- 2. निश्चयवाचक — (अ) निकटवर्ती—यह, ये
(ब) दूरवर्ती—वह, वे
- 3. अनिश्चयवाचक — (अ) प्राणिबोधक—कोई
(ब) वस्तुबोधक—कुछ
- 4. सम्बन्धवाचक — जो, सो
- 5. प्रश्नवाचक — (अ) प्राणिबोधक—कौन
(ब) वस्तुबोधक—क्या
- 6. निजवाचक — स्वयं, आप ही

2.3 विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहे जाते हैं। जिसकी विशेषता बतायी जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं और जो शब्द विशेषता बताते हैं, वे विशेषण कहे जाते हैं। काला घोड़ा शब्द में 'घोड़ा' विशेष्य (संज्ञा) है और 'काला' उसका विशेषण है।

- विशेषण चार प्रकार के होते हैं—

- गुणवाचक — नया, पुराना, लाल, पीला, मोटा, पतला, अच्छा, बुरा, गोल, चौकोर आदि।
- संख्यावाचक — बीस, पचास, दस, सौ—निश्चित संख्यावाचक; कुछ, कई—अनिश्चित संख्यावाचक।
- परिमाण अधिक — दस किलो, पाँच क्विण्टल, दस लीटर, बहुत-सा, थोड़ा, अधिक।
- सार्वनामिक विशेषण — वह घर मेरा है। 'वह' सार्वनामिक विशेषण। कोई आदमी आ रहा है। 'कोई' सार्वनामिक विशेषण।
ऐसा आदमी नहीं देखा। 'ऐसा' सार्वनामिक विशेषण।

2.4 क्रिया

जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाये, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—हँसना, खाना, पीना, जाना, चढ़ना, रोना, लिखना आदि।

- क्रिया मूलतः दो प्रकार की होती है—अकर्मक एवं सकर्मक। जिन क्रियाओं का कर्म होता है या हो सकता है, वे सकर्मक क्रियाएँ कही जाती हैं, जैसे—खाना (रोटी खाना), पीना (दूध पीना) आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं, किन्तु जिनका कर्म हो ही नहीं सकता, जैसे—रोना, सोना, हँसना, आदि। इनका कर्म सम्भव ही नहीं है। अतः ये अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

YUKTI ज्ञान—क्रिया का मूल रूप धातु (Root) कहा जाता है।

- वाच्य क्रिया का रूपान्तरण है। यह तीन प्रकार का होता है—कर्तृवाच्य (कर्ता की प्रधानता) यथा—मोहन ने दूध पीया। कर्मवाच्य (कर्म की प्रधानता) यथा—लेख लिखा गया। भाववाच्य (भाव की प्रधानता) यथा—मुझसे चला नहीं जाता।
- वाक्य में क्रिया किसका अनुसरण कर रही है—इस आधार पर तीन प्रकार के प्रयोग होते हैं—कर्तरि प्रयोग (क्रिया कर्ता के अनुसार), कर्मणि प्रयोग (क्रिया कर्म के अनुसार), भावे प्रयोग (क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन अन्य पुरुष की होती है)।
- क्रिया तीन कालों की हो सकती है—वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्य काल, इन कालों के निम्न भेद हैं—

1. वर्तमान काल के पांच भेद माने गए हैं—

- सामान्य वर्तमान — राम पढ़ता है।
- तात्कालिक वर्तमान — राम पढ़ रहा है।
- पूर्ण वर्तमान — राम पढ़ चुका है।
- संदिग्ध वर्तमान — राम पढ़ता होगा।
- संभाव्य वर्तमान — शायद राम पढ़ता हो।

2. भूतकाल के छः भेद हैं—

- सामान्य भूतकाल — राम गया।
- आसन्न भूतकाल — राम गया है।

- (ग) पूर्ण भूतकाल — राम गया था।
 (घ) अपूर्ण भूतकाल — राम जा रहा था।
 (ङ) संदिग्ध भूतकाल — राम गया होगा।
 (च) हेतुहेतुमद् भूतकाल — राम जाता।

3. भविष्यत् काल के तीन भेद हैं—

- (क) सामान्य भविष्यत् काल — राम जायेगा।
 (ख) सम्भाव्य भविष्यत् काल — संभव है, राम जाए।
 (ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल — मोहन आए, तो राम जाए।

2.5 अव्यय

ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

◆ अव्यय चार प्रकार के होते हैं—

- (1) क्रिया-विशेषण, (2) सम्बन्धबोधक,
 (3) समुच्चयबोधक, (4) विस्मयादिबोधक।

◆ क्रिया-विशेषण (अव्यय) चार प्रकार के होते हैं। यथा—

1. रीतिवाचक (ऐसे, वैसे, कैसे, धीरे, तेज, अचानक, कदाचित् आदि)
 2. स्थानवाचक (यहाँ, वहाँ, भीतर, इधर, उधर, दायें, बायें)
 3. कालवाचक (आज, कल, अभी, तुरन्त),
 4. परिमाणवाचक (बहुत, अत्यंत, जरा, थोड़ा, कम, अधिक)।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. सभी श्रोता यथास्थान बैठे थे। रेखांकित (काला) शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? उत्तराखण्ड टी.ई.टी.

- (a) अव्यय (b) क्रिया-विशेषण
 (c) संज्ञा (d) विशेषण

उत्तर—(a) अव्यय,

YUKTI ज्ञान—क्योंकि यह शब्द विकृत नहीं होता। यथा—

राम यथास्थान बैठा था। सीता यथास्थान बैठी थी। लड़कें यथास्थान बैठे थे।

2. कवि का स्त्रीलिंग शब्द है— उत्तराखण्ड टी.ई.टी.

- (a) कवीषा (b) कवियत्री
 (c) कवियित्री (d) कवयित्री

उत्तर—(d) कवयित्री

YUKTI ज्ञान—यथा— महादेवी वर्मा हिन्दी की छायावादी कवयित्री हैं।

3. जटिल विशेषण के लिए उपयुक्त विशेष्य क्या है?

- (a) दृष्टि (b) प्रश्न
 (c) समस्या (d) स्थिति

उत्तर—(c) समस्या

YUKTI ज्ञान—विशेष्य—उस शब्द को कहते हैं जिसकी विशेषता कोई विशेषण बताता है इसलिए विशेष्य — या तो संज्ञा होती है या सर्वनाम जटिल समस्या शब्द में 'जटिल' विशेषण है और 'समस्या' संज्ञा है।

4. मानव से बनी उपयुक्त भाववाचक संज्ञा है— उत्तराखण्ड टी.ई.टी.

- (a) मनस्वी (b) मानवता

- (c) मनुष्यत्व (d) आदमीयत

उत्तर—(b) मानवता

YUKTI ज्ञान—'ता' प्रत्ययान्त शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। इसलिए मानव संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनेगी — मानवता।

5. उत्तम पुरुष बहुवचन का सम्बन्ध कारक है—

- (a) तुम्हारा (b) उसका
 (c) मेरा (d) हमारा

उत्तर—(d) हमारा

YUKTI ज्ञान—उत्तम पुरुष बहुवचन का सम्बन्ध कारक है— 'हमारा' क्योंकि 'तुम्हारा' मध्यम पुरुष एकवचन का सम्बन्ध कारक है, 'मेरा' उत्तम पुरुष एकवाचक और 'उसका' अन्य पुरुष एकवचन का कारक है।

6. 'परिश्रमी' किस प्रकार का विशेषण है? उत्तराखण्ड टी.ई.टी.

- (a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक
 (c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक

उत्तर—(a) गुणवाचक

YUKTI ज्ञान—परिश्रमी का अर्थ है परिश्रम करने वाला — यह गुणवाचक विशेषण का उदाहरण है।

7. 'ध्यानपूर्वक' शब्द है—

- (a) संज्ञा (b) विशेषण
 (c) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (d) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

उत्तर—(c) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

YUKTI ज्ञान—'ध्यानपूर्वक' रीतिवाचक क्रिया विशेषण है क्योंकि उसने ध्यानपूर्वक पढ़ा। इस वाक्य में 'ध्यानपूर्वक' पढ़ने (क्रिया) की रीति को बता रहा है।

8. कमरे में कोई छिपा हुआ है; में रेखांकित शब्द क्या है?

- (a) प्रश्नवाचक सर्वनाम (b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
 (c) निजवाचक सर्वनाम (d) सम्बन्धवाचक सर्वनाम

उत्तर—(b) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

YUKTI ज्ञान—कोई शब्द अनिश्चयवाचक, प्राणिबोधक है, अतः यह अनिश्चयवाचक सर्वनाम है।

9. मोहन प्रकाश जी हिन्दी पढ़ते हैं। रिक्त स्थान की पूर्ति अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम से कीजिए। राजस्थान पुलिस सब इंस्पेक्टर

- (a) मुझे (b) तुम्हें
 (c) उन्हें (d) हमें

उत्तर—(c) उन्हें

YUKTI ज्ञान—मुझे — उत्तम पुरुषवाचक एक वचन सर्वनाम

तुम्हें — मध्यम पुरुषवाचक एक वचन सर्वनाम

उन्हें — अन्य पुरुषवाचक बहुवचन सर्वनाम

हमें — उत्तम पुरुषवाचक, बहुवचन सर्वनाम

10. हमें गरीबों पर दया करनी चाहिए; में रेखांकित शब्द है—

- (a) विशेषण (b) अव्यय
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम
उत्तर—(c) संज्ञा

11. सर्वनाम के कितने भेद होते हैं ? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) 4 (b) 5
(c) 6 (d) 3
उत्तर—(c) 6

YUKTI ज्ञान—सर्वनाम के छः भेद हैं— (1) पुरुषवाचक, (2) निश्चयवाचक, (3) अनिश्चयवाचक, (4) संबंधवाचक, (5) निजवाचक, (6) प्रश्नवाचक सर्वनाम।

12. 'लड़का' किस प्रकार की संज्ञा है ? उ.प्र. बी.एड.

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक
(c) द्रव्यवाचक (d) भाववाचक
उत्तर—(b) जातिवाचक

YUKTI ज्ञान—लड़का—जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी 'लड़का जाति' वालों का बोधक है।

13. वह धीरे-धीरे चल रहा था, इस वाक्य में रेखांकित शब्द है—

- (a) विशेषण (b) क्रिया विशेषण
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम
उत्तर—(b) क्रिया विशेषण

YUKTI ज्ञान—'धीरे-धीरे' रीतिवाचक क्रिया विशेषण है क्योंकि यह चलना क्रिया की रीति (विशेषता) बता रहा है।

14. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) चार (b) पाँच
(c) छह (d) आठ
उत्तर—(a) चार

YUKTI ज्ञान—विशेषण चार प्रकार के होते हैं— (1) गुणवाचक, (2) संख्यावाचक, (3) सार्वनामिक, (4) परिमाणवाचक विशेषण।

15. चाय में कुछ पड़ा है? इस वाक्य में रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है ? उ.प्र. टी.ई.टी.

- (a) विशेषण (b) सर्वनाम
(c) संज्ञा (d) अव्यय
उत्तर—(b) सर्वनाम

YUKTI ज्ञान—'कुछ' अनिश्चयवाचक अप्राणिबोधक सर्वनाम है।

अध्याय 3. शब्द रचना

हिन्दी में नवीन शब्दों की रचना (निर्माण) सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय द्वारा की जाती है।

3.1 सन्धि

दो शब्दों का मेल होने पर जब दो वर्ण पास-पास आते हैं, तब उनमें विकार सहित जो मेल होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

◆ सन्धि तीन प्रकार की होती है—

1. स्वर सन्धि, 2. व्यंजन सन्धि, 3. विसर्ग सन्धि।

1. स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं—दीर्घ, गुण, यण, वृद्धि, अयादि स्वर सन्धि।

i. दीर्घ सन्धि के उदाहरण—हिमालय (हिम + आलय), गिरीश (गिरि + ईश), रवीन्द्र (रवि + इन्द्र), कवीन्द्र (कवि + इन्द्र), वधु + उत्सव = वधूत्सव, शिव + आलय = शिवालय।

दीर्घ सन्धि के अन्य उदाहरण—कपि + ईश = कपीश, भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व, विद्या + अर्थ = विद्यार्थी, परम + अर्थ = परमार्थ, महा + आत्मा = महात्मा, पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, भानु + उदय = भानूदय।

ii. गुण सन्धि के उदाहरण—मृगेन्द्र (मृग + इन्द्र), महेश (महा + ईश), सत्येन्द्र (सत्य + इन्द्र), गजेन्द्र (गज + इन्द्र), भाग्योदय (भाग्य + उदय), देवर्षि (देव + ऋषि), महा + ऋषि = महर्षि, नयन + उत्सव = नयनोत्सव।

गुण सन्धि के अन्य उदाहरण—सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र, रमा + ईश = रमेश, मानव + इन्द्र = मानवेन्द्र, यथा + इष्ट = यथेष्ट, शीत + ऋतु = शीतर्तु, सप्त + ऋषि = सप्तर्षि, आत्मा + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग, पद + उन्नति = पदोन्नति।

iii. यण सन्धि के उदाहरण—इत्यादि (इति + आदि), स्वागत (सु + आगत), पित्रादेश (पितृ + आदेश), यद्यपि (यदि + अपि), अत्यधिक (अति + अधिक), प्रत्युपकार (प्रति + उपकार), अनु + एषण = अन्वेषण।

यण सन्धि के अन्य उदाहरण—अनु + इति = अन्विति, अति + उत्साह = अत्युत्साह, अति + औदार्य = अत्यौदार्य, तनु + अंगी = तन्वंगी, सु + अच्छ = स्वच्छ।

iv. वृद्धि सन्धि के उदाहरण—एकैक (एक + एक), मतैक्य (मत + ऐक्य), सदैव (सदा + एव), महौध (महा + ओध), परमौषध (परम + ओषध)।

वृद्धि सन्धि के अन्य उदाहरण—परम + ओजस्वी = परमौजस्वी, अधुना + एव = अधुनेव, महा + ओजस्वी = महौजस्वी, पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा, एक + औषधि = एकौषधि।

v. अयादि सन्धि के उदाहरण—पवन (पो + अन), पावन (पौ + अन), नयन (ने + अन), नायक (नै + अक), नायिका (नै + इका), भो + अन = भवन, भौ + उक = भावुक।

अयादि सन्धि के अन्य उदाहरण—शै + अक = शायक, शे + अन = शयन, चे + अन = चयन, पौ + अक = पावक, पौ + अस = पावस।

2. व्यंजन सन्धि—व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रूपान्तरण होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। यथा—जगत् + नाथ (जगन्नाथ), सत् + चरित्र (सच्चरित्र), अनु + स्थान (अनुष्ठान), शरत् + चन्द्र (शरच्चन्द्र), आ + छादन (आच्छादन), षट् + मास = षण्मास।

3. विसर्ग सन्धि—विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यथा—मनः + रथ (मनोरथ), दुः + गम (दुर्गम), मनः + ज (मनोज), मनः + अनुकूल (मनोनुकूल), दुः + साहस (दुस्साहस), पुनः + च (पुनश्च), निः + पक्ष = निष्पक्ष, दुः + बल = दुर्बल।

विसर्ग सन्धि के अन्य उदाहरण—मनः + योग = मनोयोग, निः + धन = निर्धन, तमः + गुण = तमोगुण, पुरः + कार = पुरस्कार, दुः + दशा = दुर्दशा, दुः + आत्मा = दुःआत्मा।

3.2 समास

समास का अर्थ है, संक्षिप्त करना। जब दो सार्थक पद पास-पास आते हैं और उनका एक पद में सम्यक् निक्षेप होता है, तब उसे समास कहा जाता है। समास बनाने की प्रक्रिया में विभक्तियाँ और योजक चिह्नों का लोप हो जाता है।

- ◆ हिन्दी में छह समास माने गये हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्विगु, द्वन्द्व।
- 1. **अव्ययीभाव समास**—अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होता है और समस्त पद अव्यय की भाँति काम करते हैं। जैसे—यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), आजीवन (जीवन-पर्यन्त), यथाक्रम (क्रम के अनुसार), अतीन्द्रिय (इन्द्रियों से परे), अत्यधिक (अधिक से भी अधिक), अनुस्मारक (स्मृति दिलाने वाला)।
अव्ययीभाव समास के अन्य उदाहरण—यथाविधि = विधि के अनुसार, भरपेट = पेट भरकर, आजन्म = जन्म पर्यन्त, प्रतिदिन = प्रत्येक दिन, हरघड़ी = हरेक घड़ी।
- 2. **तत्पुरुष समास**—तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—राजकुमार (राजा का कुमार), घुड़सवार (घोड़े पर सवार), जेबकट (जेब को काटने वाला), तुलसीकृत (तुलसी द्वारा रचित), ऋणमुक्त (ऋण से मुक्त), हस्तलिखित, (हाथ से लिखा हुआ), प्रत्यक्ष (आँख के आगे)।
तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण—यशप्राप्त = यश को प्राप्त, कठफोड़ा = काठ को फोड़ने वाला, कष्टसाध्य = कष्ट से साध्य, मर्दांध = मद से अंधा, बलिपशु = बलि के लिए पशु, देवालय = देव के लिए आलय, श्रापमुक्त = श्राप से मुक्त, भाग्यहीन = भाग्य से हीन, भावातीत = भाव से अतीत, सेनापति = सेना का पति, मंत्रिपरिषद = मंत्रियों की परिषद, नराधम = नरों में अधम, शिलालेख = शिला पर लिखा लेख, गृहस्थ = गृह में स्थित, सुखदायी = सुख को देने वाला, पादप = पैर से (जलधारा) पीने वाला।
- 3. **कर्मधारय समास**—कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण—विशेष्य या उपमेय—उपमान सम्बन्ध होता है। यथा—नीलकमल (नीला है जो कमल), पुरुषोत्तम (पुरुषों में उत्तम), महापुरुष (महान् है जो पुरुष), शुभागमन (शुभ है जो आगमन), कमलनयन (कमल जैसे नेत्र), घनश्याम (घन जैसा श्याम)।
कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण—नवयुवक = नव है जो युवक, हताश = हत है जिसकी आशा, सज्जन = सत् है जो जन, बहुमूल्य = बहुत है जिसका मूल्य, कुतूहल = कुत्सित है जो कृत्य, परमात्मा = परम है जो आत्मा, पीताम्बर = पीत है जिसका अम्बर, नवार्गतुक = नव है जो आगतुक।
- 4. **बहुव्रीहि समास**—यह अन्य पद प्रधान समास है, जैसे—गजानन (गज के समान है आनन जिसका वह अर्थात् गणेश), पंचानन (पाँच हैं मुख

जिसके वह अर्थात् शंकर जी), चतुर्मुख (चार हैं मुख जिसके वह अर्थात् ब्रह्मा जी), हंसवाहिनी (हंस है वाहन जिसका वह अर्थात् सरस्वती), चक्रधर (चक्र को धारण करने वाले अर्थात् विष्णु)।

बहुव्रीहि समास के अन्य उदाहरण—दशानन = दश हैं जिसके आनन वह अर्थात् रावण, त्रिनेत्र = तीन हैं नेत्र जिसके वह अर्थात् शंकर जी, चंद्रशेखर = चंद्रमा है शिखर (ललाट) पर जिसके वह अर्थात् शंकर जी, सज्जन = सत् है जो जन, मंदाग्नि = मंद है जो अग्नि, महासागर = महान है जो सागर।

- 5. **द्विगु समास**—इसका पहला पद संख्यावाची होता है और पूरा पद समाहार का बोधक होता है। यथा—त्रिपदी (तीन पैरों वाली तिपाई), अठनी (आठ आनों का समूह), त्रिभुज (तीन हैं भुजाएँ जिसकी ऐसी आकृति), सप्तर्षि (सात ऋषियों का समूह), पंचतत्व (पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि, वायु का समाहार), त्रिफला (हर, बहेड़ा, आँवला का समाहार), पंचवटी (पाँच बट वृक्षों का समाहार)।
द्विगु समास के अन्य उदाहरण—द्विगु = दो गायों का समूह, सप्ताह = सात दिनों का समूह, चौराहा = चार रास्तों का समाहार, नवरत्न = नौ रत्नों का समाहार, चतुर्गुण = चार गुणों का समाहार।
- 6. **द्वन्द्व समास**—द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा इनके बीच योजक चिह्न लगा होता है जो या तो विकल्प सूचक होता है या समाहार सूचक। यथा—माता-पिता (माता और पिता), हानि-लाभ (हानि या लाभ), राम-लक्ष्मण (राम और लक्ष्मण), भाई-बहन (भाई और बहन), राजा-रंक (राजा या रंक)।

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण—नर-नारी = नर और नारी, ऊँच-नीच = ऊँचा और नीचा कुल का, बाप-दादा = बाप और दादा, मोटा-पतला = मोटा या पतला, मेल-मिलाप = मेल और मिलाप, अन्न-जल = अन्न और जल, राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

- 1. 'ज्ञानोदय' में कौन-सी सन्धि है?
(a) विसर्ग सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) अयादि सन्धि (d) व्यंजन सन्धि
उत्तर—(b) गुण सन्धि

YUKTI ज्ञान—ज्ञानोदय = ज्ञान + उदय (अ + उ = ओ) गुण संधि है।

- 2. 'निराधार' का सन्धि विच्छेद है—
(a) निरा + आधार (b) निस् + आधार
(c) निर + आधार (d) निः + आधार
उत्तर—(d) निः + आधार

YUKTI ज्ञान—निराधार = निः + आधार— विसर्ग संधि है।

- 3. 'भानूदय' में कौन-सी सन्धि है?
(a) गुण (b) अयादि
(c) वृद्धि (d) दीर्घ
उत्तर—(d) दीर्घ सन्धि

YUKTI ज्ञान—भानूदय = भानु + उदय— दीर्घ संधि है।

4. विसर्ग सन्धि किस शब्द में है ?

- (a) अतएव (b) नरेन्द्र
(c) सज्जन (d) सदैव

उत्तर—(a) अतएव

YUKTI ज्ञान—अतएव = अतः + एवं— विसर्ग संधि है। नरेन्द्र में गुणसंधि, सज्जन में व्यंजन संधि और सदैव में वृद्धि संधि।

5. हाथों-हाथ में कौन-सा समास है ?

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) द्वन्द्व (d) द्विगु

उत्तर—(a) अव्ययीभाव

6. 'पीताम्बर' में कौन-सा समास है ?

- (a) तत्पुरुष (b) अव्ययीभाव
(c) बहुव्रीहि (d) द्विगु

उत्तर—(c)

YUKTI ज्ञान—बहुव्रीहि—पीले हैं वस्त्र जिसके वह अर्थात् विष्णु। पीताम्बर—पीला है जो वस्त्र— कर्मधारय। पीला है जिसका वस्त्र वह विष्णु— बहुव्रीहि समास

7. 'चरणकमल' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व

उत्तर—(b) कर्मधारय

YUKTI ज्ञान—चरणकमल—कमल जैसे चरण—कर्मधारय समास

8. 'घुड़सवार' में समास है—

- (a) द्विगु (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) अव्ययीभाव

उत्तर—(c) तत्पुरुष (घोड़े पर सवार)

9. 'नवरत्न' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) द्विगु (d) द्वन्द्व

उत्तर—(c) द्विगु

YUKTI ज्ञान—नवरत्न = नौ रत्नों का समूह—पहला पद संख्यावाची है, अतः द्विगु समास है।

10. 'जलोष्मा' में सन्धि, समास बताइये—

हरियाणा टी.ई.टी.

- (a) गुण, तत्पुरुष (b) दीर्घ, कर्मधारय
(c) अयादि, बहुव्रीहि (d) द्विगु, अव्ययीभाव

उत्तर—(a) गुण सन्धि

तत्पुरुष समास—जल की ऊष्मा

YUKTI ज्ञान—जलोष्मा = जल + ऊष्मा—गुणसंधि है क्योंकि अ + उ = ओ

11. 'आजीवन' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) द्विगु (d) अव्ययीभाव

उत्तर—(d) अव्ययीभाव

YUKTI ज्ञान—आजीवन—जीवन पर्यन्त—अव्ययीभाव समास है, पूरा पद अव्यय है।

12. 'चक्रपाणि दर्शनार्थ' में समास है—

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहि

उत्तर—(c) अव्ययीभाव

YUKTI ज्ञान—चक्रपाणि दर्शनार्थ—चक्रपाणि के दर्शन के लिए—पूरा पद अव्यय है, अतः अव्ययीभाव समास है।

13. 'लम्बोदर' उदाहरण है—

- (a) बहुव्रीहि का (b) तत्पुरुष का
(c) द्वन्द्व का (d) कर्मधारय का

उत्तर—(a) बहुव्रीहि

YUKTI ज्ञान—लम्बोदर—लम्बा है उदर जिसका वह अर्थात् गणेश जी—बहुव्रीहि समास (अन्य पद प्रधान)

14. 'कमलनयन' में कौन-सा समास है ?

- (a) तत्पुरुष (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

उत्तर—(c) कर्मधारय

YUKTI ज्ञान—कमलनयन—कमल रूपी नयन—कर्मधारय (उपमेय उपमान सम्यन्ध)

15. 'तिरंगा' में समास है—

- (a) द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) अव्ययीभाव (d) कर्मधारय

उत्तर—(b) द्विगु

YUKTI ज्ञान—तिरंगा = तीन रंगों का समूह—द्विगु (पहला पद संख्यावाची है)

16. 'पुनर्गठन' का सन्धि विच्छेद होगा—

- (a) पुनः + गठन (b) पुनर् + गठन
(c) पुन + गठन (d) पुनर + गठन

उत्तर—(a) पुनः + गठन

YUKTI ज्ञान—पुनर्गठन = पुनः + गठन—विसर्ग संधि

17. 'भवन' में कौन-सी सन्धि होगी ?

उत्तर प्रदेश टी.ई.टी.

- (a) गुण (b) यण
(c) अयादि (d) दीर्घ

उत्तर—(c) अयादि सन्धि

YUKTI ज्ञान—भवन = भो + अन—अयादि संधि

18. विद्यार्थी का सही सन्धि विच्छेद है—

- (a) विद्या + अर्थी (b) विद्या + र्थी
(c) विदा + अर्थी (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) विद्या + अर्थी

YUKTI ज्ञान—विद्यार्थी = विद्या + अर्थी — दीर्घ संधि (आ + अ = आ)

19. सम् + गठन की सन्धि होगी—

- (a) समगठन (b) संगठन
(c) सगठन (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b) संगठन

YUKTI ज्ञान—सम् + गठन = संगठन — व्यंजन संधि है।

20. इनमें किस शब्द में विसर्ग सन्धि है?

- (a) अतएव (b) नरेन्द्र
(c) पावन (d) सज्जन

उत्तर—(a) अतएव

YUKTI ज्ञान—अतएव = अतः + एवं = विसर्ग संधि है

नरेन्द्र = नर + इन्द्र = गुण संधि

पावन = पौ + अन = अयादि संधि

सज्जन = सत् + जन = व्यंजन संधि

3.3 उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश हैं, जो किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता ला देते हैं। जैसे—प्र + हार = प्रहार, वि + हार = विहार, उप + हार = उपहार। यहाँ प्र, वि, उप उपसर्ग हैं।

YUKTI ज्ञान—हिन्दी भाषा में संस्कृत उपसर्गों के साथ-साथ हिन्दी के अपने उपसर्ग एवं अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के कुछ उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं।

- संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग हैं, जिनमें से 21 का प्रयोग हिन्दी में होता है। इन उपसर्गों की सूची इस प्रकार है—अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्, उन, दुर्, दुस्, नि, निर्, निस्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु। 'अभि' उपसर्गों का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता है।
- उपसर्ग से बने कुछ शब्द हैं—अत्यधिक, अभ्यर्थी, आजन्म, अवरोध, अपवर्तन, अपमान, निःसंदेह, उन्नति, उन्नीस, परामर्श, परिवार, प्रत्यक्ष, संशय, सुपुत्र, सुयोग्य।
- हिन्दी के कुछ उपसर्ग—अ (अभाव), अध (अधखिला), अन (अनजान), उन (उन्नीस), औ (औगुन), उ (उनीदा), क (कपूत), दु (दुबला), नि (निडर), पर (परलोक), स (सदय), चौ (चौराहा), ति (तिपाई), दु (दुगुना)।
- अरबी-फारसी उपसर्ग—अल (अलगरज), कम (कमजोर), खुश (खुशबू), गैर (गैर-हाजिर), बव (बदबू), बा (बाइज्जत), बे (बेइज्जत), बिला (बिलावजह), ला (लाचार), दर (दरकिनार), ना (नालायक), सर (सरपंच), हम (हम-उम्र), हर (हरेक)।
- अंग्रेजी उपसर्ग—सब (सब-रजिस्ट्रार), हाफ (हाफपैट), डिप्टी (डिप्टीसाब), हैड (हैडमुनीम), चीफ (चीफ साहब)।

- जो शब्दांश स्वतन्त्र रूप से किसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वे उपसर्ग नहीं कहे जा सकते, क्योंकि उपसर्ग का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता।

कुछ प्रमुख उपसर्गों से निर्मित शब्द

संस्कृत उपसर्ग—

- अति अत्यन्त, अत्यधिक, अतिरिक्त, अतीन्द्रिय, अत्यल्प
- अधि अधिकार, अध्यक्ष, अध्यात्म, अधिनायक, अधिसूचना
- अनु अन्वय, अनुरूप, अनुशासन, अनुकूल, अनूदित
- अप अपमान, अपयश, अपकार, अपव्यय, अपहरण
- अभि अभ्यर्थी, अभ्यागत, अभीष्ट, अभियन्ता, अभिमान
- अव अवगुण, अवसान, अवनति, अवधान, अवसाद
- आ आजन्म, आजीवन, आमरण, आयात, आजीविका
- उत् उन्नति, उत्कर्ष, उन्मुख, उच्चारण, उल्लंघन
- उप उपभाषा, उपमन्त्री, उपवन, उपयोग, उपचार
- दुर् दुर्बल, दुर्जन, दुराचार, दुर्गम, दुर्लभ
- दुस् दुस्साहस, दुष्प्राप्य, दुश्चरित्र, दुष्कर्म
- नि निपात, निडर, निगम, निबन्ध, निवास
- निर् निरपराध, निर्बल, निर्जन, निर्गुण, निराहार
- निस् निस्सार, निश्चल, निष्पादन, निष्कासन, निस्तारण
- परा पराभव, परामर्श, पराधीन, पराकाष्ठा
- परि परिपूर्ण, परिमाण, परीक्षा, पर्यवेक्षक, पर्यटन
- प्र प्रबल, प्रयोग, प्रसार, प्रकीर्ण, प्रमाद
- प्रति प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रत्यक्ष, प्रतिष्ठा, प्रत्यर्पण
- वि विशेष, विज्ञान, विवाद, वियोग, व्यसन
- सम् सम्यक्, संयोग, संयम, संचार, संजय
- सु सुकर्म, सुपुत्र, सुयश, स्वागत, सुपरिचित

हिन्दी उपसर्ग—

- अन अनपढ़, अनजान, अनमोल, अनगिनत, अनहोनी, अनभल
- अ अथाह, अजान, अचेत, अधीन, अमर, अछूत, अपच
- अध अधपरा, अधमरा, अधखिला, अधकचरा, अधपार
- उन उनसठ, उनईस, उन्तीस, उनतालीस, उनचास, उनासी
- औ औगुण, औसर, औघड़, औतार
- उ उनीदा, उथला, उभरना, उचक्का
- कु कुमार्ग, कुतौर, कुरूप, कुकर्म, कुदृष्टि, कुदंग
- पूर्व पूर्वाह्न, पूर्वार्द्ध, पूर्वोक्त, पूर्वापर
- स सफल, सहज, सशक्त, सगुण, सस्वर
- सह सहायत्री, सहगामी, सहयोग, सहधर्मिणी, सहकर्मी
- स्व स्वदेश, स्वगत, स्वचालित, स्वरचित, स्वरूप, स्वधर्म
- न नास्तिक, नपुंसक, नेति

विदेशी उपसर्ग—

1. कम कमजोर, कमबख्त, कमसिन, कमअक्ल
2. खुश खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी
3. गैर गैरबाजिब, गैरहाजिर, गैरसरकारी, गैरकानूनी, गैरजिम्मेदार
4. ब बदस्तूर, बमुश्किल, बतौर, बखूबी, बशर्ते, बदौलत
5. बद बदमाश, बदनाम, बदबू, बदतमीज, बदजबान, बदजात
6. बे बेइज्जत, बेखटका, बेजुबान, बेसहारा, बेरहम
7. बा बाइज्जत, बाकायदा, बाअदब, बामशक्कत, बामुलाहिजा।
8. दर दरअसल, दरहकीकत, दरकिनार, दरवेश, दरकार
9. ना नालायक, नाराज, नापाक, नाचीज, नाबालिग, नाखुश
10. हम हमराज, हमबिस्तर, हमउम्र, हमवतन, हमजुल्फ, हमसफर
11. हर हरदम, हरवक्त, हररोज, हरएक, हरघड़ी, हरतरफ

3.4 प्रत्यय

प्रत्यय वह शब्दांश है, जो किसी शब्द के बाद (पीछे) जुड़ता है और उसके अर्थ में विशिष्टता ला देता है। जैसे—एरा (ममेरा, लुटेरा), ई (बेईमानी), आलु (दयालु, कृपालु) आदि।

- ◆ बेईमानी शब्द में बे उपसर्ग है, ईमान (मूल शब्द), ई प्रत्यय है। इनसे मिलकर बेईमानी शब्द बना है।

YUKTI ज्ञान—संस्कृत में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—तद्धित प्रत्यय एवं कृत प्रत्यय।

- ◆ जो प्रत्यय किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द में जुड़ते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहे जाते हैं; जैसे—दया + आलु = दयालु। यहाँ आलु तद्धित प्रत्यय है, क्योंकि यह दया संज्ञा में जुड़ा है और इससे बना शब्द—दयालु तद्धितांत कहलायेगा।
- ◆ जो प्रत्यय किसी धातु में जुड़ते हैं वे 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं और इनके जोड़ने से जो शब्द बनता है, उसे कृदन्त कहते हैं। जैसे—चल (धातु) + अक (कृत प्रत्यय) = चालक (कृदन्त शब्द)।

YUKTI ज्ञान—हिन्दी प्रत्ययों को डॉ. मोलानाथ तिवारी ने चार वर्गों में बाँटा है—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी प्रत्यय।

- ◆ तत्सम प्रत्यय के कुछ उदाहरण—अक (निन्दक), अनीय (पठनीय), आ (युवा), य (देय), इक (आलंकारिक), इल (पंकिल), इमा (मधुरिमा), एय (कौन्तेय), वती (भाग्यवती), धर (विद्याधर)।
- ◆ तद्भव प्रत्यय के कुछ उदाहरण—आई (पढ़ाई), आका (लड़ाका), आर (सुनार), आस (मिठास), ऐला (विषैला), ता (सोता), नी (ओढ़नी), ल (मंजुल), वान (गाड़ीवान), अक्कड़ (पियक्कड़), आटा (सन्नाटा)।
- ◆ विदेशी प्रत्यय के कुछ उदाहरण—आना (जुर्माना), इन्दा (वाशिन्दा), ईन (संगीन), खाना (दवाखाना), खोर (घूसखोर), सार (मिलनसार), बीन (तमाशबीन), दान (खानदान), ची (नकलची), दार (दुकानदार), इज्म (बुद्धिज्म), इस्ट (कम्पुनिस्ट)।
- ◆ संज्ञा से विशेषण तथा विशेषण से संज्ञा बनाने में प्रत्ययों का प्रयोग होता है। यथा—शिष्ट (विशेषण) से शिष्टता (संज्ञा), काला (विशेषण) से

कालिया (संज्ञा), निशा (संज्ञा) से नैश (विशेषण), फल (संज्ञा) से फलित (विशेषण), बाजार (संज्ञा) से बाजारू (विशेषण)। प्रत्ययों से बने कुछ अन्य शब्द—ठाकुर से ठकुरा, कोठा से कोठरी, खाट से खटिया, सोना से सुनहरा, कड़वा से कड़वाहट, आनन्द से आनन्दित, कुन्ती से कौन्तेय, मूर्ख से मूर्खता, लोक से लौकिक, माँस से माँसल, देहात से देहाती, धन से धनवान।

कुछ प्रमुख प्रत्ययों से बने शब्द इस प्रकार हैं—

- अक निन्दक, पाचक, हिंसक, पाठक, लेखक
- अनीय पठनीय, दर्शनीय, कथनीय, रमणीय, पूजनीय
- आ इच्छा, पूजा, कथा, व्यथा, शिक्षा
- अ कौशल, पौरुष, गौरव, मौन
- इक आलंकारिक, धार्मिक, आर्थिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक
- इत फलित, हर्षित, पल्लवित, मुकुलित, पठित
- इमा मधुरिमा, गरिमा, महिमा, कालिमा, नीलिमा
- इल पंकिल, फेनिल, धूमिल, कुटिल, चोटिल
- ईन कुलीन, शौकीन, ग्रामीण, प्राचीन, नवीन
- ईय भवदीय, भारतीय, परकीय, नारकीय, स्वकीय
- एय कौन्तेय, राधेय, गांगेय, भागिनेय, आंजनेय
- तया सामान्यतया, विशेषतया, मुख्यतया
- ता शूरता, वीरता, निडरता, कायरता, नवीनता
- कार साहित्यकार, स्वर्णकार, पक्षकार, पत्रकार, चित्रकार
- ज अम्बुज, नीरज, आत्मज, अग्रज, अनुज
- वती भाग्यवती, रूपवती, प्रभावती
- दायी सुखदायी, कष्टदायी, दुःखदायी, उत्तरदायी
- आई पढ़ाई, लिखाई, लड़ाई, सिलाई, बुराई
- अन चलन, कहन, सुवन, पालन, मिलन
- आर सुनार, गँवार, लुहार
- आस मिठास, खटास, प्यास, निंदास
- आल ससुराल, ननिहाल, घड़ियाल, ददिआल
- आवना लुभावना, डरावना, सुहावना
- आवट सजावट, तरावट, मिलावट, बनावट
- इयल मरियल, अड़ियल, सड़ियल
- इन पुजारिन, तेलिन, साँपिन, पापिन, बाधिन, लोहारिन
- इया लुटिया, डिबिया, मुखिया, रसिया, छलिया
- ईला पथरीला, चमकीला, नुकीला, जहरीला
- एरा सँपेरा, ममेरा, चचेरा, घनेरा, बहुतेरा
- ऐत डकैत, लटैत, अल्लैत
- ऐला विषैला, कसैला, मटैला, बनैला
- नी ओढ़नी, वरनी, चटनी, मिलनी
- पन बचपन, लड़कपन, बालपन, पागलपन
- ल मंजुल

- वान गाड़ीवान, कोचवान, मेजवान, मेहरवान
- वाल कोतवाल,
- हरा इकहरा, दोहरा, तिहरा
- अक्कड़ भुलक्कड़, सुवक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़
- आक तैराक, तड़ाक, खटाक, धड़ाक
- इयत इंसानियत, हैवानियत, असलियत
- आना जुर्माना, नजराना, सालाना
- ईन संगीन, रंगीन, नमकीन, बेहतरीन
- खोर सूदखोर, हरामखोर, घूसखोर, आदमखोर
- ची नकलची, बन्दूकची, मशालची, तबलची
- बीन तमाशबीन, खुर्दबीन, दूरबीन
- कार पक्षकार, जानकार, सलाहकार, पैरोकार, कास्तकार,
- मन्द हुनरमन्द, दौलतमन्द, सेहतमन्द, फायदेमन्द
- बन्द बख्तरबन्द, कलमबन्द, बाजूबन्द, मोहरबन्द
- नाक दर्दनाक, खौफनाक, खतरनाक, शर्मनाक
- जादा रईसजादा, पीरजादा, शाहजादा, हरामजादा
- साज घड़ीसाज, कारसाज, जिल्दसाज, जालसाज
- वर ताकतवर, नामवर, दिलवर
- दार इज्जतदार, सरदार, जमींदार, दुकानदार
- दान पानदान, खानदान, पीकदान
- गार मददगार, यादगार, खिदमदगार, रोजगार, कामगार, गुनाहगार
- इन्दा बाशिन्दा, परिन्दा, कारिन्दा, शर्मिन्दा, जिन्दा
- उआ गेरुआ, फगुआ, बबुआ, नउआ
- ऊ पेटू, खाऊ, चालू, ढालू, दब्बू, नक्कू
- ओला मेंझोला, सँपोला, खटोला
- औना बिछौना, खिलौना, दिठौना
- हरा इकहरा, दोहरा, तिहरा, सुनहरा
- हारा लकड़हारा, पनिहारा,
- हार कहार, मनिहार, होनहार, भूमिहार
- नशीन परदानशीन, गद्दीनशीन, तरख्तनशीन

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

1. 'अप्रत्याशित' शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय अलग अलग कीजिए—
- (a) अ, प्रति, इत (b) अ, प्रत्य, त
- (c) अ, प्रत्या, शित (d) इनमें से कोई नहीं
- उत्तर—(a) अ, प्रति, इत

YUKTI ज्ञान—अ, प्रति, उपसर्ग हैं, इत प्रत्यय है। मूल शब्द आशा है।

प्रति + आशा = प्रत्याशा, इत प्रत्यय जोड़कर शब्द बनेगा प्रत्याशित और इसमें अ उपसर्ग जोड़कर शब्द बनेगा अप्रत्याशित।

2. किस शब्द में प्रत्यय है?

- (a) ससुराल (b) बेहाल
- (c) बहाल (d) बेअदब

उत्तर—(a) ससुराल

YUKTI ज्ञान—ससुराल में ससुर (प्रकृति) + आल (प्रत्यय) है। शेष शब्दों में उपसर्ग जुड़ा है।

3. 'उच्छिष्ट' शब्द से उपसर्ग अलग कीजिए—

- (a) उ (b) उच्
- (c) उत् (d) उच्छि

उत्तर—(c) उत्

YUKTI ज्ञान—उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

4. 'अध्यक्ष' में कौन-सा उपसर्ग है?

- (a) अ (b) अधि
- (c) अध्य (d) अक्ष

उत्तर—(b) अधि

YUKTI ज्ञान—अधि + अक्ष = अध्यक्ष—यण सन्धि

5. इसमें कौन-सा प्रत्यय नहीं है ?

- (a) ई (b) पन
- (c) ता (d) अनु

उत्तर—(d) अनु

YUKTI ज्ञान—अनु उपसर्ग है, शेष तीनों प्रत्यय हैं।

6. 'बेईमान' में उपसर्ग बताइये—

- (a) बे (b) बा
- (c) बेई (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(a) बे

7. कौन-सा शब्द उपसर्ग रहित है ?

- (a) संगम (b) क्रोध
- (c) अभ्यर्थी (d) प्रत्यर्पण

उत्तर—(b) क्रोध

YUKTI ज्ञान—क्रोध उपसर्ग रहित है। संगम में सम् उपसर्ग, अभ्यर्थी में अभि उपसर्ग, प्रत्यर्पण में प्रति उपसर्ग है।

8. 'लटैत' शब्द में प्रत्यय बताइये—

- (a) त (b) ऐत
- (c) एत (d) टैत

उत्तर—(b) ऐत, लाठी (प्रकृति) + ऐत प्रत्यय = लटैत

9. 'गुरुत्व' में प्रत्यय बताइये—

- (a) गुरु (b) त्व
- (c) व (d) अ

उत्तर—(b) त्व

10. कौन-सा उपसर्ग 'प्रत्यागमन' में है ?

- (a) प्र (b) प्रत्य
- (c) प्रति (d) प्रत्या

उत्तर—(c) प्रति

YUKTI ज्ञान—प्रति। प्रति + आगमन = प्रत्यागमन। मूल शब्द गमन है जिसमें पहले आ उपसर्ग जोड़ा, फिर आगमन में प्रति उपसर्ग जोड़ा है। शब्द बना—प्रत्यागमन।

11. अभ्यर्पण में कौन-सा उपसर्ग है? **हरियाणा टी.ई.टी.**
 (a) अभि (b) अ
 (c) अभ्य (d) इनमें से कोई नहीं
 उत्तर—(a) अभि
12. अधमरा में कौन-सा उपसर्ग है?
 (a) अ (b) अध
 (c) मरा (d) इनमें से कोई नहीं
 उत्तर—(b) अध
13. इनमें से कौन-सा शब्द उपसर्ग रहित है?
 (a) संगम (b) बैर
 (c) विमोचन (d) प्रत्यर्पण
 उत्तर—(b) बैर
14. इनमें से कौन-सा प्रत्यय कृत प्रत्यय नहीं है? **उत्तराखण्ड टी.ई.टी.**
 (a) मान (b) आऊ
 (c) अक्कड़ (d) ओड़
 उत्तर—(a) मान
15. 'निशा' से बना विशेषण शब्द है—
 (a) निशि (b) निशित
 (c) नैश (d) इनमें से कोई नहीं
 उत्तर—(c) नैश
16. 'समुराल' में कौन-सा प्रत्यय है?
 (a) राल (b) ल
 (c) लु (d) आल
 उत्तर—(d) आल
17. 'पूजनीय' में कौन-सा प्रत्यय है? **हरियाणा टी.ई.टी.**
 (a) नीय (b) य
 (c) अनीय (d) पूजा
 उत्तर—(c) अनीय
18. शब्द के अन्त में जुड़ता है—
 (a) उपसर्ग (b) प्रत्यय
 (c) निपात (d) सन्धि
 उत्तर—(b) प्रत्यय
19. उज्ज्वल में कौन-सा उपसर्ग है?
 (a) उ (b) उत्
 (c) उज् (d) इनमें से कोई नहीं
 उत्तर—(b) उत्
20. 'उन्नति' में कौन-सा उपसर्ग है?
 (a) उ (b) उन्
 (c) उत् (d) उन्न
 उत्तर—(c) उत्

अध्याय 4. हिन्दी शब्दावली



भाषा की न्यूनतम इकाई वाक्य, वाक्य की न्यूनतम इकाई शब्द और शब्द की न्यूनतम इकाई वर्ण (ध्वनि) है।

♦ बनावट के आधार पर हिन्दी शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

1. रूढ़, 2. यौगिक, 3. योगरूढ़ शब्द।

- रूढ़ शब्द**—जिन शब्दों के सार्थक खण्ड न हो सकें, वे रूढ़ शब्द कहे जाते हैं, जैसे—पानी में पा + नी सार्थक खण्ड नहीं है, अतः पानी रूढ़ शब्द है।
- यौगिक शब्द**—जो शब्द दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके सार्थक खण्ड हो सकते हैं, **यौगिक शब्द** कहे जाते हैं, जैसे—दूधवाला = दूध + वाला, घुड़सवार = घोड़ा + सवार। यहाँ दोनों खण्ड सार्थक हैं।
- योगरूढ़ शब्द**—जो शब्द यौगिक तो होते हैं, पर अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक बन जाते हैं, **योगरूढ़ शब्द** कहे जाते हैं; जैसे—जलज = जल + ज = जल में उत्पन्न अर्थात् कमल। जल में बहुत सारी चीजें उत्पन्न होती हैं, किन्तु परम्परा से इसका अर्थ केवल कमल ही लिया जाता है अतः यह योगरूढ़ शब्द है।

4.1 हिन्दी शब्द समूह

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द चार प्रकार के हैं—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी।

- तत्सम**—वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी ध्वनि परिवर्तन के संस्कृत से आये हैं, तत्सम शब्द हैं, जैसे—अग्नि, राजा, उलूक, गर्दभ, अश्रु, पंक्ति, पौत्र, धूम, घटक।
- तद्भव**—वे शब्द जो अनेक ध्वनि परिवर्तनों के बाद हिन्दी में आये हैं, तद्भव शब्द कहे जाते हैं, जैसे—धरती, नाक, नाई, गंगा, उल्लू, गधा, घोड़ा, कोयल, ऊँट, उक्त शब्द क्रमशः धरित्री, नासिका, नापित, नग्न, उलूक, गर्दभ, घोटक, कोकिल, उष्ट्र तत्सम से बने हैं।
- देशज**—वे शब्द जो आवश्यकतानुसार ध्वन्यात्मक अनुकरण के आधार पर गढ़ लिये गये हैं, इस वर्ग के शब्द हैं। यथा—फटफटिया (फट-फट की आवाज के कारण), गोड़, कबड्डी, झंझट, टट्टू, थोथा, भोंपू, खर्राटा, खचाखच आदि।
- विदेशी**—वे शब्द जो हिन्दी में विदेशी भाषाओं से आये हैं, इस वर्ग में आते हैं। भारत पर मुसलमानों एवं अंग्रेजों का बहुत दिनों तक शासन रहा, अतः हिन्दी में अरबी-फारसी, अंग्रेजी के बहुत सारे शब्द आ गये हैं। यहाँ ऐसे कुछ शब्दों की सूची प्रस्तुत है—

- अरबी-फारसी शब्द**—अखबार, अदालत, अमीर, आदमी, औरत, किताब, खबर, तरक्की, तकदीर, जुलूस, मजहब, मतलब, हिसाब, हकीम, अदा, आराम, आमदनी, आवाज, जिगर, दफ्तर, दर्जी, दवा, दरवाजा, दीवार, मजदूरी, साहब, अगर, अदालत, किशमिश, कारीगर, इशारा, इनाम, सराय, गर्द, गवाह, बेरहम, दुकान, मकान, सूद, लाल, शराब, शहर, दिमाग, दावत, बुखार, सौदागर आदि।

- **अंग्रेजी शब्द**—अपील, अफसर, अस्पताल, कमेटी, रजिस्टर, पेन, कमीशन, कण्डक्टर, स्टील, पेन्सिल, पैण्ट, रेडियो, सिनेमा, लाइन, रेल, मोटर, कार, फाइल, जज, रबर, टीवी, मोबाइल, फ्रिज, कूलर, स्टील, टेरालीन, कोट, शर्ट, साइकिल, स्कूटर, राशन, पास, फेल, प्रेस, बटन, बॉस, डाक्टर, क्लर्क, प्रिंसिपल, ड्राइवर, प्लेन आदि

- **तुर्की शब्द**—तोप, तमगा, तमाशा, उर्दू, कालीन, कुली, कैची, खंजर, चम्मच, बेगम, बारूद, आका, चेचक, चमचा, बहादुर, मुगल लफंगा, सराय, दारोगा आदि
- **फ्रेंच शब्द**—बेसिन, लैम्प, कप, मेयर, मादाम, मार्शल, सूप, पिकनिक, कारतूस, मीन।

तत्सम तद्भव रूपान्तरण

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
• अग्नि	आग	• कदली	केला	• घोटक	घोड़ा	• भ्रातृजाया	भौजाई
• अक्षत	अच्छत	• कोकिल	कोयल	• घृत	घी	• भाद्रपद	भादौ
• अंगुष्ठ	अँगूठा	• कूप	कुआँ	• धैर्य	धीरज	• भगिनी	बहन
• अम्लिका	इमली	• गर्दभ	गधा	• धात्री	धाय	• भिक्षा	भीख
• अष्ट	आठ	• गृह	घर	• नक्षत्र	नखत	• भक्त	भगत
• अंगुलि	उँगली	• गम्भीर	गहरा	• नासिका	नाक	• भक्षिका	भक्खी
• अट्टालिका	अटारी	• गोपालक	ग्वाला	• नव्य	नया	• मस्तक	माथा
• आदित्यवार	इतवार	• गोस्वामी	गुसाई	• निष्ठुर	निदुर	• पृष्ठ	पीठ
• आश्चर्य	अचरज	• उष्ट्र	ऊँट	• नग्न	नंगा	• पौत्र	पोता
• आभीर	अहीर	• उलूक	उल्लू	• निद्रा	नींद	• पुच्छ	पूँछ
• आमलक	आँवला	• उच्च	ऊँचा	• निम्बु	नीबू	• पुष्कर	पोखर
• आम्र	आम	• उज्ज्वल	उजला	• निम्ब	नीम	• परश्व	परसों
• इक्षु	ईख	• उपरि	ऊपर	• पत्र	पत्ता	• प्राण	प्राण
• इष्टिका	ईट	• उपालम्भ	उलाहना	• पश्चाताप	पछताना	• प्रण	पन
• ओष्ठ	ओठ	• चक्र	चाक	• पक्वान्न	पकवान	• बधिर	बहरा
• कपोत	कबूतर	• चन्द्र	चाँद	• प्रहर	पहर	• बिन्दु	बूँद
• कपाट	किवाड़	• चंचु	चोंच	• पारद	पारा	• राजपुत्र	राजपूत
• कर्ण	कान	• चित्रकार	चितेरा	• विकार	बिगाड़	• रुदन	रोना
• काष्ठ	काठ	• चतुष्पद	चौपाया	• वाष्प	भाप	• रुष्ट	रुठा
• कुम्भकार	कुम्हार	• चतुष्पदी	चौपाई	• वृश्चिक	बिच्छू	• लक्षण	लच्छन
• कृषक	किसान	• चर्म	चमड़ा	• व्याघ्र	बाघ	• लोमक्ष	लोमड़ी
• काक	काग	• चतुर्थ	चौथा	• वारिद	बादल	• हर्ष	हरख
• कार्य	काज	• चूर्ण	चूरन, चून	• श्वास	सांस	• ऋक्ष	रीछ
• कंकण	कंगन	• छिद्र	छेद	• शृंगार	सिंगार	• शिक्षा	सीख
• जिह्वा	जीभ	• परीक्षा	परख	• शुष्क	सूखा	• श्याली	साली
• जंघा	जांघ	• प्रस्वेद	पसीना	• शर्करा	शक्कर	• श्रेष्ठी	सेठ
• ज्योति	जोत	• दक्षिण	दाहिना	• स्कंध	कन्धा	• शुक	सुआ
• त्रयोदशी	तेरस, तेरहवीं	• दधि	दही	• मकर	मगर	• शाप	सराप
• तृण	तिनका	• दुग्ध	दूध	• मिष्टान्न	मिष्ठान्न	• सर्प	साँप
• तिक्त	तीता	• दुर्बल	दुबला	• मयूर	मोर	• स्वर्णकार	सुनार
• तप्त	ताता	• दीपक	दीआ	• मुक्ता	मोती	• सूत्र	सूत
• तूर्य	तुरही	• दृष्टि	दीठ	• यज्ञ	जग्य	• साक्षी	साखी
• गोत्र	गोत	• दंश	डंक	• युक्ति	जुगति	• होलिका	होली
• गुहा	गुफा	• दूर्वा	दूब				
• गौर	गोरा	• बालुका	बालू				
• घट	घड़ा	• भ्रमर	भौरा				